हरीश भादानी.
खुले अलाव
पकाई
घाटी

अपना ही आकाश··

•

शहरीले जंगल में

कहीं तो आग होगी ही

खुले अलाव पकाई घाटी

ड्योढ़ी

ड्योढी रोज शहर फिर आए

कुनमुनते ताम्बे की सुइया
खुभ-खुभ आख उघाडे
रात ठरी मटकी उलटा कर
ठठरी देह पखारे
विना नाप के सिये तकाजे
सारा घर पहनाए
ड्योढी रोज शहर फिर आए

मासों की पंखी भलवाए
रूठी हुई अगीठी
मनवा पिघल भरे आटे मे
पतलो कर दे पीठी
मिसरी मीठो भरे टिफिन मे
वैरागी-सी जाए
ड्योढी रोज शहर फिर आए

पहिये पाव उठाये सडकें
होड लगाती भागे
ठण्डे दो मालो चढ जाने
रखे नसैनी आगे
दोराहो-चौराहो मिलना
टक्करा कर अलगाए
ड्योढी रोज शहर फिर आए

सूरज रख जाए पिंजरे मे
जीवट के कारीगर
घडा-बुना सब बाध धूप मे
ले जाए बाजीगर
तन के ठेले पर राशन की
थकन उठा कर लाए
ड्योढी रोज शहर फिर आए

कुदनिया दुनिया से
झीलती हकीकत की
बडी-बडी ग्राखो को
असुवा गई हवा
दिन ढलते-ढलते

हरफ सब रसोई मे
भीड किए ताप रहे
क्षण के क्षण चूल्हे मे
अगिया गई हवा
दिन ढलते ढलते

धूप सडक की

धूप सडक की नही सहेली

जब कोरे मेडी ही कोरे
छत पसरी पसवाडे फोरे
छजवालो से छीटे मल-मल
पहन सजे शौकीन हवेली

काच खिडकियो से बतियाये
गोरे आगन पर इठलाये
आहट सुन कर ही जा भागे
जगले पर बेहया अकेली

आख रगे चेहरे उजलाये
हरियल दरी हुई बिछ जाए
छुए न सवलाई माटी को
खाली सी परात तपेली

सडक पाव का रोजनामचा
मडे उमर का सारा खरचा
सुख के नावें जुगो दुखो की
बिगत बाचना लगे पहेली

धूप सडक की नही सहेली

सर पर बाध धुए की टोपी
फरनस मे कोयले हसाए
टीन काच से तपी धूप पर
भीगी भीगी देह छराए
पानी ग्रागुन ग्रागुन पानी
तन-तन बहती जाए
शहरीले जगल मे सासें
हलचल रचती जाए

लोहे के ग्रालिये काटे
जितने बिखरें रोज बुहारे
मन मे बहुरूपी बीहड के
एक-एक कर ग्रक्स उतारे
खिडकी बैठे कम्प्यूटर पर
तलपट लिखती जाए
शहरीले जगल मे सासे
हलचल रचती जाए

हाथ भूनती हुई रमोई
बाजारो के फेरे देती
भावो की बिएजारिन तकडी
जेरे ले पुडिया दे देती
सुबह-शाम खाली बाबो मे
जीवट भरती जाए
शहरीले जगल मे सासें
हलचल रचती जाए

दस की सीढी चढ दफ्तर मे
लिखे रजिस्टर हाजर
कागज के जगल मे बैठी
आखें गुनतो आखर
एके के कहने पर होता
भुजिया मूडी चखना
क्या बोले मन सुगना

गाहन सूरज घिस चिटगाये
दातो की पुनभडिया
भुनसी पोरा टाप्प टीपे
आदेशो की थन्यिा
मीच पाच से मुचा हुआ दिन
झुकी कमर ले उठना
क्या बोले मन सुगना

रके न देखे घडी कभी
तन पर लदती पीडा
दिन कुरसी पर रात खाट पर
कुतरे भय का कीडा
घर से सडक चले पुरजे की
किसने की है रचना

क्या बोले मन सुगना
टिक टिक बजती हुई घडी से

रचना है

जिन्हें अपने समय का आज रचना है

अकेली फैलती
आखें दुखाती चाह को
सूने दुमाले से
सुवह आजे उतरना है
जिन्हें अपने समय का आज रचना है

आगने हंसती
हकीकत से
तकाजो का टिफिन लेकर
सवालो को
मशीनो के वियावा से गुजरना है
जिन्हें अपने समय का आज रचना है

तगारी भर जमी
आकाश रखते हाथ को
होकर कलमची
गणित के उपनिषद् की
हर लिखावट को बदलना है
जिन्हें अपने समय का आज रचना है

आदमी से आदमी की
पहचान खाए लोग
आदमी से आदमी को
तोड़ने का शौक साज लोग
तोड़ी गई हर हर इकाई को
धड़कता एवं सम्बोधन गजलना है
जिन्हें अपन समय का आज रचना है

ठहर जाए स्वप्न भोग
वे जिन्हें
इतिहास जीना है
कम चन सकल्प मे छैनी
जिन्हें अपने समय का आज रचना है

रेत है रेत

इसे मत छेड
पसर जाएगी
रेत है रेत
बिफर जाएगी

कुछ नही प्यास का समदर है
जिन्दगी पाव पाव जाएगी

धूप उपने है इस कलेजे पर
हाथ मत डाल ये जलाएगी

इसने निगले हैं कई लश्कर
ये कई और निगल जाएगी

न छलावे दिखा तू पानी के
जमी आकाश तोड लाएगी

उठी गावो से ये खम खाकर
एक आधी सी शहर जाएगी

आख की किरकिरी नही है ये
झाक लो झील नजर आएगी

सुबह बीजी है लडके मौसम से
सींच कर सास दिन उगाएगी

काच अब क्या हरीश माजे है
रोशनी रेत मे नहाएगी

इसे मत छेड
पसर जाएगी
रेत है रेत
बिफर जाएगी

जगल सुलगाए हैं

आए जब चौराहे आगाज वहाए हैं
लम्हात चले जितने परवाज वहाए हैं

हद तोड़ अधेरे जब
आखो तक धम आए
जीने के इरादो ने जगल सुलगाए हैं

जिनको दी अगुआई
चढ गए कलेजे पर
लोगो ने गरेबा से वे लोग उठाए हैं

वदूक ने वद किया
जब जब भी जुवानो को
जज्बात ने हरफो के मरवाज उठाए हैं

गुम्बद की खिडकी से
आदमी नही दिखता
पाताल उलीचे हैं ये शहर वनाए हैं

जब राज चला केवल
कुछ खास घरानो का
कागज के इशारे से दरबार ढहाए है

मेहनत खा सपने खा
चिमनिया धुम्रा थूकें
तन पर बीमारी के पैवद लगाए हैं

दानिशमदो बोलो
ये दौर अभी कितना
अपने ही धीरज से हर सास अघाए है

न हरीश करे लेकिन
अब ये तो करेगे ही
झुलसे हुए लोगो ने अदाज दिखाए हैं

आए जब चौराहे आगाज कहाए हैं
लम्हात चले जितने परवाज कहाए हैं

बाकी अभी यारो

उम्र सारी इस बयाबां मे गुजारी यारो
सर्द गुमसुम ही रहा हर मास पै तारी यारो

कोई दुनिया न बने
रंग-लहू के खयाल
गोया रेत ही पर तस्वीर उतारी यारो

देखा ही किए झील
वो समदर वो पहाड
अपनी हर आख सियाही ने बुहारी यारो

जहा सडक गली
आगन जैसे बाज़ार चले
न चले अपनी न चले यहा असआरी यारो

रहबरो तक गई
वो तलाश रहे साथ सफर
उसकी आबरू हर बार उतारी यारो

हा निढाल तो है
पर कोई चलना तो कहे
मन के पावो की वाकी अभी वारी यारो

उठके डूवे है कही
अपनी आवाज यहा
एक आगाज से ही सिलसिला जारी यारो

अव जो वदलो तो कही
हो गुनहगार हरीश
वही रगत वे ही दौर वही यारी यारो

उम्र सारी इस वयावा मे गुजारी यारो
सर्द गुमसुम ही रहा हर सास पै तारी यारो

क्या किया जाए

बता फिर क्या किया जाए

सड़क फुटपाथ हो जाए
गली की थाह मिल जाए
सफर को क्या कहा जाए
बता फिर क्या किया जाए

नजर दूरी बचा जाए
लिखावट को मिटा जाए
क्या इरादे को कहा जाए
बता फिर क्या किया जाए

स्वरों से छंद अलगाए
गले में मौन भर जाए
गजल को क्या कहा जाए
बता फिर क्या किया जाए

उजाला स्याह हो जाए
समंदर बर्फ हो जाए
कहां क्या-क्या बदल जाए
बता फिर क्या किया जाए

आदमी चेहरे पहन आए
लहू का रग उतर जाए
किसे क्या-क्या कहा जाए
वता फिर क्या किया जाए

समय व्याकरण समझाए
हमे ग्र ग्रा नही ग्राए
जिन्दगी को क्या कहा जाए
वता फिर क्या किया जाए

चाहों की थाली

लोहे की नगरी में भैया
लोहे की नगरी मे

फेरी वाला सायरन
हूंकता दस्तक देता
जडे किवाडो
नीद झाड उठ जाती वस्ती
कस पावो के पेंच
बिछाती जाती सडकें
फाटक से परवाना लेकर
नाम टीपता
अपना नम्बर
उठा सलाम देखते ही
पहिये चल जाते
गा-गा बुनते सूत
साम के तकुए
तान बिछाए आगें छापें
तहें सवारे जाए थपिये
इतने पर भी
पुरजे जैसा
जिये आदमी
लोहे की नगरी मे भैया
लोहे की नगरी मे

पातालों की पर्त उघाड़े
उभक-उभक कर
कसी कुदाली
भरे फावडा हुग्रा निवाला
सुरमा नीवें
थप थप थाप सुलाए

तोला-मासा
चूना-बजरी
रसमस-रसमस
गुथ-गुथ दोनो हाथ भरें
माथे पर रख लें

छैनी बैठी लिखे चिट्ठिया
ग्रौर तगारी
बासो की सीढी थामे
ईंटें रख ग्राए ग्रासमान पर
ग्रौर धूप को
चिढा चिढा कर
रंगती जाये कोरे चेहरे
ताम्बे के तन वाली कूची

पर हाड-मास की
ऊंचाई तो
घिसती ही रहती है
लोहे की नगरी में भैया
लोहे की नगरी मे

आ भाग जाता जेबें भर
मय टोप कर
ाली टिफिन निकलता बाहर
सकेतो का
एक कथानक रच जाता है

आज बदल देने का
मौसम ओढे
सडक सरक जाती गलियो मे
घूम रही होती
ड्योढी की धुरी थाम कर
प्रश्नो की
छोटी-सी दुनिया

खुली हथेली पर
दुख गिन देते लौटे कारीगर
जमती हुई नसो पर
फोहे-सा ठर जाता
भीगा आचल

आगन टागे
खूटी पर मजबूरी
और रसोई
तुतलाता कोलाहल आज परोसे
कडछी बजा-बजा
चाहो की थाली
लोहे की नगरी मे भैया
लोहे की नगरी मे

गोरधन

काल का हुआ इशारा
लोग हो गए गोरधन

हद कोई जब माने नहीं अहम
आँख तरेरे बरसे बिना फहम
तब बासुरी बजे
बध जाय हथेली
ले पहाड का छाता
जय-जय गोरधन !

हठ का ईशर जब चाहे पूजा
एक देवता और नहीं दूजा
तब सौ हाथ उठे
सडको पर रख दे
मदिर का सिहासन
जय-जय गोरधन !

सेवक राजा रोज रगे चोले
भाव-ताव कर राज धरम तोले
तब सौ हाथ उठे
उठ थरपे गणपत
गणपत बोले गोरधन
जय-जय गोरधन !

शहर

शहर सो गया है

एक सीटी जिसे
आकाश-पाताल देती गई
साख भरता हुआ
सूर्य सरका अभी
हाथ पर दाग भर रह गया है
शहर सो गया है

रची आंख ने दोपहर
सांझ मांडी कंगूरों छतों
रंगे सांस के रंग सारे
मरे मुह से निकला धुआं धो गया है
शहर सो गया है

बठा हुआ था
बाजार में जो
अभी शोर का संतरी
उगे मौन के इस बियाबान में
सहमा हुआ खो गया है
शहर सो गया है

बुत रोशनी के
सडक के किनारे
लटका दिये सूलियो पर
अधेरे के पजे मे स्वर फस गया है
शहर सो गया है

आग पानी की हद पार
पसरा रहा
ओढ कर
थकन की फटी सी रजाई
छाती मे घुटने धसा सो गया है
शहर सो गया है

याद नही है

चले कहा से
गए कहा तक
याद नही है

आ बैठा छत ले सारगी
बज-बजता मन सुगना बोला
उतरी दिशा लिए आगन मे
सिया हुआ किरणो का चोला
पहन लिया था
या पहनाया
याद नही है............

झुन-झुन सीढी ने हाथो से
पावो नीचे सडक बिछाई
दूध भरी बाछो ने खिल-खिल
थामी बाह करी अगुवाई
रेत रची कब
हुई विदाई
याद नही है............

रासे खीच रोशनी सवटो
पीठ लिये रथ भागे घोडे
उग आए आखो के आगे
मटियल स्याह धुओ के धोरे
सूरज लाया
या खुद पहुचे
याद नही है.......... .

रिस-रिस झर-झर ठर-ठर गुमसुम
झील हो गया है घाटी मे
हलचलती बस्ती मे केवल
एक अकेलापन पाती मे
दिया गया या
लिया शोर मे
याद नही है ....

चले कहा से
गए कहा तक
याद नही है . .. .

नहाया है

मन रेत मे नहाया है

आच नीचे से
आग ऊपर से
वो धुआए कभी
झलमलाती जगे
वो पिघलती रहे
बुदबुदाती बहे
इन तटो पर कभी
धार के बीच मे
डूब-डूब तिर आया है
मन रेत मे नहाया है

घास सपनो सी
बेल अपनो सी
साम के सूत मे
सात स्वर गूथ कर
भैरवी मे कभी
साध केदारा
गूगी घाटी मे
सूने धोरो पर
एक आसन बिछाया है
मन रेत मे नहाया है

आंधिया वाख मे
आसमा आख मे
धूप की पगरखी
ताम्बई अगरखी
होठ आखर रचे
शोर जैसा मचे
देख हिरनी लजी
साथ चलने सजी
इस दूर तक निभाया है

मन रेत मे नहाया है

कबूतर अकेला

किस दिशा को उडे
    अब कबूतर अकेला

आग भरती हुई
जब मुडेरें उठी
    फडफडा गई पाखे
सूत रोशनी का
ले सुई सास की
    पिरोती गई आखें
बुन गए आकाश मे
कुछ धुए आ अडे
    किस दिशा को उडे......

पांत से टूट कर
छाह की माप के
    कई रास्ते रच गए
छोर साधे हुए
बीच गहरा गई
    खाइयो मे मुच गए
देह होकर जुडे वे
सब जुदा हो खडे
    किस दिशा को उडे......

डना पछी को
रे पिंजरे मे
मौसम का बहेलिया
ाखी सूरज का
कुरियाया चेहरा
रात से अवेर दिया
ुनमुनाई चोच को
ीध नेजे गड़े

किस दिशा को उड़े
अब कबूतर अकेला

रचते रहने की

मौसम ने रचते रहने की
ऐसी हमें पढाई पाटी

रखी मिली पथरीले आगन
माटी भरी तगारी
उजली-उजली धूप रसमसा
आखें सीच मठारी
एक सिरे से एक छोर तक
पोरें लीक बनाई घाटी
मौसम ने रचते रहने की।
ऐसी हमें पढाई पाटी

आसपास के गीले बूझे
बीचोबीच बिछाये
सूखी हुई अरणिया उपले
जगल से चुग लाए
सासो के चकमक रगडा कर
खुले अलाव पकाई घाटी
मौसम ने रचते रहने की
ऐसी हमें पढाई पाटी

मोड ढलानो चौके जाए
आखर मन का चलवा
अपने हाथो से थकने की
कभी न माडे पडवा
कोलाहल मे इकतारे पर
एक धुन गुजवाई घाटी

मौसम ने रचते रहने की
ऐसी हमे पढाई पाटी

हवा ही शायद

कोई एक हवा ही शायद
इस चौराहे रोक गई है

फिर फिर फिरे गई हैं आखें
रेत विछी सी
पलको से बूदें अवेर कर
रखी रची सी
हिलक-हिलक कर रही खोजती
तट पर जैसे एक समदर
वरसो से प्यासी थी शायद
धूप चाटती सोख गई है
कोई एक हवा ··

हुए पखावज रहे बुलाते
गूगे जगल
बज-बजती सास हुई है
राग विलावल
भूल गया भनमलता सपना
भूले जैसे एक रोशनी
वरसो से बोभिल थी शायद
रात अधेरा झोक गई है
कोई एक हवा···

थप थप पांवों न थापी है
सडक दूब सी
रंगती गई पुरवा दूर को
दिशा उर्वशी

          माप गई आकाश एषणा
          जैसे एक सफेद कबूतर

होड बाज ही होकर शायद
डैने खोल दबोच गई है

कोई एक हवा ही शायद
इस चौराहे रोक गई है

छीटा ही होगा

पीट रहा मन
बंद किवाड़े

देखी ही होगी आखो ने
यही-यही ड्योढी खुल-खुलती
प्रश्नातुर ठहरी आहट से
बतियायी होगी सुगबुगती
बिछा बिछाये होगे आखर
फिर क्यो झर-झर झरे स्वरो ने
सन्नाटो के भरम उघाडे
पीट रहा मन ··

समझ लिया होगा पाखो ने
आसमान ही इस आगन को
बरस दिया होगा आखो ने
बरसो कडवाये सावन को
छीटा ही होगा दुखता कुछ
फिर क्या हाथो मे झिटकाकर
रग हुआ दागीना झाडे
पीट रहा मन···

प्यास जनम की बोली होगी
आंचल है तो फिर दुधवाये
ठुनकी बैठ गई होगी ज़िद
अगुली है तो थमा चलाये
चौक तलाश उतरली होगी
फिर क्यो अपनी सी सज्ञा ने
सर्वनाम हो जडे किवाडे

पीट रहा मन
बद किवाडे

झिरमिर धूप झरी

वे सब कहा उडी

एक चिडी ने जगल जगल
जा आ आकर
एक पेड पर लाये तिनके
रखे बिछा कर
रसमस माटी रसमस तन मन
रूप रचाये
सासें पी-पी
चोचें चहक पडी

दाने चुग चुग बाट निहोरे
साझ सवेरे
फड फड फुद फुद पाटी पढकर
पख उकेरे
नीले नील आसमान से
रग ली आखें
झुरमुट हिलका
झिरमिर धूप झरी

गुन-गुन गूजी शाख-शाख ज्यो
एक शहर हो
भरी उडानें बरसो जैसे
एक पहर हो
कोने बैठी हवा न जाने
तमक गई क्यो
काली पीली
आधी हुए झडी

सावन एक सिपाही जैसा
छत पर आकर
मटिया-मटिया राख फेक दी
गुर गुर्राकर
बिजुरी कड-कड पैने दातो
पीस गई सब
गीतो जैसी
वो बस्ती उजडी

वे सब कहा उडी

अपराधी

किससे करूं शिकायत
मेरा हिरना मन अपराधी

ओ अलगोजे
आलाप उठे तुम तो
रागो के मानसून
वह गए दिशाओं
मेरी ही तृष्णा पी गई
स्वरों के सात समदर
किससे करूं शिकायत
मेरा हिरना मन अपराधी

ओ शिखरो के सूरज
कोलाहल के पावो उतरे तुम
गली-गली मे
आज गए उजियारा
बद किवाडे किये रही
मेरी ही घाटी
किससे करूं शिकायत
मेरा हिरना मन अपराधी

पोर-पोर मे
दुनिया भर गए तुम तो
माटी के आगन
फर गई उलटी हथेलिया
मेरी पुरवा-पछुवा
किससे करूं शिकायत
मेरा हिरना मन अपराधी

दे गए मुझे तुम
पीपल से कागज
झलमलती स्याही
मोर पाख दे गए लेखने
बरफ हो गई लिखने से पहले
मेरी ही भाषा
किससे करूं शिकायत
मेरा हिरना मन अपराधी

तपाया करूं

ठहराव मे क्यो बधा ही रहू

पीठ दे ही गई जब
क्षितिज की दिशा
आवाज़ क्यों दू उसे
उसी के लिए
फिर हरफ क्यो घडू
ठहराव से क्यो बधा ही रहू

सवालो के कपडे पहन जब
सडक ही खडी हो गई सामने
उसी पर
चरण खोज के क्यो उठाऊ-धरू
ठहराव से क्यो बधा ही रहू

सीढियो से उतर कर कुहरना ही हो जब
धरम सूर्य का
फिर उजालो मे मिलते अधेरो की
किससे शिकायत करू
क्यो उसी धूप से आख खोलू-भरू
ठहराव से क्यो बधा ही रहू

हाथ पर हाथ ही जब
सुलगता हुआ
एक चुप रख गए
इसी आग से
और कितनी उमर
सिर्फ झुलसा करू
किसी और शुरूआत की
एषणा ही तपाया करू

ठहराव से क्यो बधा ही रहू

एपणा पर

कैसे पैबंद लगाऊ

जिस कैनवास पर
अगले क्षण
तस्वीर उजलनी थी
वह कौन हवा थी

यहा-वहा से
गुमसुम लील गई
फट गई एपणा पर
कैसे पैबंद लगाऊ

लिखनी थी जिनसे
अगले ही क्षण
अर्थवती पोथी
वे कौन जुबानें थी
दरवाजे रख गई पत्थरो की भाषा
कागज के नर्म कलेजे पर
कैसे हरफ बिछाऊ

होनी थी जिनमे
अगले ही क्षण
क्षितिजो छूती धरती
        कैसी थी दीवारें
पथ बाट गई
मन के मन बाट गई
अजनबी हुई सज्ञाए
        कौन स्वरो आवाजू

कैसे पैवद लगाऊ

वे ही स्वर

वे ही स्वर वे ही मनुहारें

वही वही दस्तक ड्योढी पर
वही वही अगवाता आंचल
वह आंगन
वे ही दीवारें

वही ख़याल खिलौने वे ही
वे मौसम वे ही पोशाकें
वही उलहना
वे तक़रारें

वही लाज घेरें मृग छौने
सिके वही चदोवा रोटी
वही निवाला
वे मनुहारें

वही वही हठियाये चेहरे
बहला लेती वही हकीक़त
वही गोद
वे सगुन उतारें

वही वही निदियाये आखें
थपके वही गीत सिरहाने
वे ही स्वर
वे ही हिलकारें

वही तकाजों का दरिया है
वही नाव है कोलाहल की
वे हिचकोलें
वे पतवारें

यह दुनिया यादो को दे दे
चुप का चौकीदार बिठा द
क्या बतियाये
किसे पुकारें

तुम

ओ तुम

गीत ही बुनता रहा आगन
तुम्हारी आहटो से
गूज वे गले मे
गुमसुम बाध कर गए तुम
ओ तुम

दिशा ही तो देखती रही आखें
तुम्ही से सूरजमुखी
लरजता उजले क्षितिज का
एक सपना घुघवा कर गए तुम
ओ तुम

तुम्ही से हा तुम्ही से रेखा किए
दुखते फलक पर
शोर का ससार
रगो मे भरी हथेलियो पर
ठडी आग का
हिमालय रख गए तुम
ओ तुम

किससे भरू
कैसे भरू
यात्रा मे आई दरारें
कैसे टाक लू पैवद
फट गई तितीर्षा पर
 पिरो तो लू कभी
विरासत मे बची
नगी सुई
सूत भर सम्बन्ध भी
समेट कर ले गए तुम
 ओ तुम

पत्थरों को
उकेरा किये हाथ
सास होती रही हवा
आग-पानी
पाव रच-रच गए रेत
उतरे विखेरू
अड-अड गए
छितरा गए
एक-एक क्षण पी गए
हुआ कुछ भी नही
उम्र का
एक और तलपट
गलत हो गया

जिज्ञासा

और छलांगें भर
हिरनी जिज्ञासा

आदत है
गूंगे सूरज की
बैठा-बैठा आग तरेरे

बिना ठौर की
हवा न पूछे
और सफर कितनी दूरी का
घिरे मौन के नीचे
आवाज तलाशे जा जिज्ञासा
और छलांगें भर
हिरनी जिज्ञासा

प्रश्नों का विस्तार
पहाड़ों पर
उत्तर के आभास दिया करता है
झुलस रही यायावर मांगें

पाँव न हारें
टेर लगाती जा जिज्ञासा
और छलांगें भर
हिरनी जिज्ञासा

यही यही पर
धरती उठ जाती
आकाश झुका करता है
झर-झरता
चल रलता
बह जाता है
इन्हीं क्षणों से छू जाने तक
पाँव छापती जा जिज्ञासा

और छलांगें भर
हिरनी जिज्ञासा

होना पड़ा

…बाज़ार होना पड़ा

हरफ ही उलट कर
खड़े हो गए
क्या बोलते
फिर अपनी जिभे
गुमसुमाये रहो तो
हकीकत के इजलास में
जुबां को
गुनहगार होना पड़ा

मकानों में
बसेरा तो जाते मगर
जिस दिशा को गए
घेरे गए
घुरी यूँ बनाई गई
देह को
सवालों का हथियार होना पड़ा

धड़कनें चीज हो लें
बिकें बेच लें
तब उन्मूलन किया जा सके
घड़ना न आया
ऐसा कभी
मगर बांधे रहो
एषणा के लिए
जिन्दगी को
साझ का ही सही
उठता हुआ
बाजार होना पड़ा

चलने का
इतना सा माने
वाह वाह
घाटी दर घाटी
पाव पाव
दूरी दर दूरी
काट गए काफिले रास्ता
यह ठहराव न जी पाएंगे

टूटी गजल न गा पाएंगे

मितवा

कल से क्या
आज से गवाही ले मितवा

घाटी में आंगन है
आंगन में बाहें
बांहनी दहरिया की
कल से क्या
आज से गवाही ले मितवा

आंखों में झीलें हैं
झीलों में रंग
रंगवनी हलचल की
कल से क्या
आज से गवाही ले मितवा

माटी में गांवें हैं
गांवों के होठ
बोलती पंचायत की
कल से क्या
आज से गवाही ले मितवा

दूरी पर चौराहे
चौराहे खुभते हैं
चरवाहे पावों की
कल से क्या
आज से गवाही ले मितवा

रात एक पाटी है
पहर-पहर लिखता है
उजलती हकीकत की
कल से क्या
आज से गवाही ले मितवा

घाटी मे आगन है, आगन मे बाहे

सड़क

जाने कब से सड़क अकेली

दस्तक पांव नहीं देते हैं
लोरी नहीं सुनाती आहट
उमर अनींदी
दूर-दूर आंखें पसराती
जाने कब से सड़क अकेली

सूरज अंगुली नहीं थामता
रुनझुन नहीं बजाता बादल
उमर अब्याही
हिलका-हिलका कर सिसकती
जाने कब से सड़क अकेली

छाती तोड़ गया है गुमसुम
हवा उड़ाये कफन रेत का
उमर अगूंजी
टूटा-टूटा शोर सामने
जाने कब से सड़क अकेली

सध्या गर्म राख रख जाती
रात शरीर झुलस जाती है
उमर दागिनी
क्षण-क्षण दुखता अकथ पिरोती
जाने कब से सडक अकेली

ठूठ किनारे के वड पीपल
गूगे मील-मील के पत्थर
उमर अनसुनी
चौराहो मर-मर जी लेती
जाने कब से सडक अकेली

अपना ही आकाश बुनूं मैं

सूरज सुर्ख बनाने वालो
सूरजमुखी दिखाने वालो

अंधियारे बीजा करते हैं
गीली माटी में पीड़ाएं

पोर-पोर
फटती देखूं मैं
केवल इतना सा उजियारा
रहने दो मेरी आंखों में
सूरज सुर्ख बनाने वालो
सूरजमुखी दिखाने वालो

अर्थ नहीं होता है कोई
अर्थ से ही टूटी भाषा का

तार-तार
कर सकूं मौन को
केवल इतना शोर सुबह का
भरने दो मुझको सांसों में
स्वर की हदें बांधने वालो
पहरेदार बिठाने वालो
सूरज सुर्ख............

गलियारों से चौराहों तक
सफर नहीं होता है कोई
अपना ही
आकाश बुनूं मैं
केवल इतनी सी तलाश ही
भरने दो मुझको पाखों में
मेरी दिशा बांधने वालो
दूरी मुझे बताने वालो

सूरज सुर्ख बताने वालो
सूरजमुखी दिखाने वालो

आवाज दी है

आवाज दी है तुम्हे इसलिये

शोर की सास मे
जी रही खामोशिया
अनसुनी रह न जाए कही
आवाज दी है तुम्हें इसलिये

बरसात के बाद की
गुनगुनी धूप की छाह मे
रह न जाए कही
आगने मे नमी
आवाज दी है तुम्हें इसलिये

जुड़े अक्षरों का यहां
एक ही अर्थ होता रहा
और भी अर्थ होते हैं जो
अनकहे रह न जाएं कहीं
आवाज दी है तुम्हें इसलिये

इन्हे

क्या हो गया है इन्हे

रोशनी की
हिलक्ती हुई
फुलझडी थे कभी
राख का आकाश होने लगे
ये सूरजमुखो
क्या हो गया है इन्हे

खुलते हुए
अर्थ के
रास्ते थी कभी
सदेह की वाबिया
होने लगी आखें
क्या हो गया है इन्हे

हाथ घडते रहे
जो कगूरे कभी
फेंकने लग गये
काच की किरकिरी
क्या हो गया है इहे

रोशनाई लिये

चलें, आग के रंग की
रोशनाई लिये

सांझ के रंग में
एषणाएं भिगोते हुए
संकल्प की
एक तस्वीर रंगें
कोरे पटे
हर दिशा के सफे पर
रोशनाई लिये

एक आवाज को
आंधियों में बदल
जहां भी सवेरे उठी
बल की चोटियां
सभी को
बहा लाए ज़मीं पर
रोशनाई लिये

भर गई है
धुए ही धुए से सदी
आंख भी यू फिरे कि
देखें कही और दिखे और ही
पोछ दे, आज दें
भरे धूप से अजुरी
रोशनाई लिये

अजनबी सी जिये है
इकाई इकाई
टूटे यही हा यही
आदमी की लडाई
उघाडें भरम
असल एक चेहरा दिखाए
रोशनाई लिये

ओ दिशा

स्वरों के पखेरू उड़ा
ओ दिशा
कब से खड़े रास्ते घेर कर
संशयों के अंधेरे
सहमी हुई खोज ड्योढ़ी खड़ी
ठहरे हुए ये चरण
झिलमिले हो उठें
सरहद की हवेली पर
दृष्टि का सूर्य रख ले
ओ दिशा

मौन के साथ कुण्डली लगाये हुए
हर एक चेहरा
हर दूसरे से अलग जी रहा
साँस बजती नहीं
साँस से साँस मिलती नहीं
सारे शहर में कहीं कुछ धड़कता नहीं
चौक भर-भर बुनें
शोर का आसमां
स्वरों के पखेरू उड़ा
ओ दिशा

धूपाए

आ सवाल चुगें धूपाए

दीवारो पर
आ बैठी यादो की सीलन
नीचे से ऊपर तक रग खरोंचे
कुतर न जाए
माटी का मरमरी कलेजा
आ सवाल चुगे धूपाए

आख लगाये है
पिछवाडे पर सन्नाटा
जोड-जोड पर नेजे खोभे
सेध न लग जाए
हरफो के घर मे
आ फसीलो से गूजें पहराए

पसर गया है
बीच सडक भूखा चौराहा
उभक उभक मुह खोले भरम निपोरे
निगल न जाए
यह तलाश की कामधेनु को
आ वामन होले चल जाए

क्या तोड गए

उनसे करें सवाल, चलो
क्या तोड गए वे रिश्तों में

धड़क रहा है
यह टुकड़ा
उसमें से खुशबू आती है
आवाज़ रहा है
यह टुकड़ा
उसमें से गर्म-गर्म बहता
खिसका तो वे गए
देह से
कुछ सवाल वे
और मिला क्या
उनसे करें सवाल, चलो

वे दोनों भीगे-भीगे
यह अंगारा
यह पानी है
यह टूटा हाथ सितारे का
वे तो खुद बाँध गए
आँगन में कोलाहल से
कुछ और मिला क्या
उनसे करें सवाल, चलो

सडक लगें
    ये बिछे-बिछे
सकेन रहा है
यह टुकडा
    इन पर
पीछे की धूल चढी
    उठ गए पाव
ये दो टुकडे
    वे तो बीच दरार गए
बुजियो उजलती दूरी के
कुछ और मिला क्या

उनसे कर सवाल, चलो
क्या तोड गए वे किश्नो मे

हरफों के पुल

रच लें फिर
और-और हरफों के पुल

एक एक पाँव तले
एक-एक द्वीप
आगे है ठहरी हुई
खाई की झील
गहराये बीच
चौड़ाये पाट
रच लें फिर
और-और हरफों के पुल

भाग-भाग अलग अलग
थके-थके शरीर
भाग हुआ फिरते हैं
भीतर का चोर
चेहरों पर लिखती है चोर
आँखों में प्रश्नों की धुन्ध
रच लें फिर
और-और हरफों के पुल

लाघ-लाघ जाता हू
सूरज की ओर
खीज-खीज उझकता हू
तानता हू हाथ
    बध जाए शायद
        एक-एक मुट्ठी मे
किरणो के
कई-कई वास
पावो से तट तक
उग आए
        पथरीले द्वीपो पर
        वासो के पुल
    रच ले फिर
और-और हरफो के पुल

मैं भी लूं

मैं भी प्राण तो लूं

इस इरादे की मथानी को
बाहों-बाहों

बांध लिया
मथ-मथ ही दिया
कल्पना के समंदर को
और उछलते गए
उन पसीनों की तरह
वही सोने का कलश

मैं भी हाथ तो लूं
मैं भी प्राण तो लूं

वे ख्यालों के
निमन ही निमन
कागजों के पहाड़ उठाये गए
तोड़-तोड़ गए

चांद के इदर का महल
सपने-उजाड़ हुए
उन पसीनों की तरह
बह ग्या बीज कहीं

मैं भी प्राण तो लूं

गाय की
एक अल्हड़ सी हंसी
फेंक गए
वे नियामत के बयाबां में
वे उकेर गए
यान के पत्थर पर
लोह का जमीर
गूंजती ही गई
उन जवानों की तरह
वे ही आवाज-हरफ
मैं भी आवाज तो तू
मैं भी प्राण तो तू

सांकलें काटने

रोशनी
तुमको आवाज देते रहे

आसमां को
जमीं पर
झुका देखती आंख में
आ पड़ी किरकिरी

रिसते हुए
गुनगुने दर्द को पोंछने
रोशनी
तुमको आवाज देते रहे

आहटों में जुड़े
दूर की पाट
बना दी गई एक खाई
बीच में.
दलदली भीड़ को लांघने
रोशनी
तुम को आवाज देते रहे

थकन ओढ़कर
सो गया है
मशीनों चिमनियों का शहर
जड़ लिए हैं
किवाड़े-खिड़कियां
गुमसुम खड़ा है
खबरदार बोले
मनों पर लगी सांकलें काटने
रोशनी
तुम को आवाज देते रहे

रचनाएँगी

जाने क्या-क्या कर जाएगी

भले अभी तो आखों को यह
पसरी-पसरी लगे
मगर यह रेत, रेत है
एक समदर उफनाएगी
जाने क्या-क्या·········

अभी भले ही हुई धुएं सी
लगते-लगते हवा
यहां हो यहां वहां से
यहां-वहां तक धुंधियाएगी
जाने क्या-क्या·········

जाने कब से बर्फ गिरे है
जम गई है यहां
मगर सवेरे ! सवेरे
सूरज पी-पी पिघलाएगी
जाने क्या-क्या·········

बरसे बरसे कोई मौसम
बुझी-बुझी सी लगे
मगर जगरे मे चिनगी
पडी राख उठ ओटाएगी
जाने क्या-क्या······ ···

ठूठ हुए पेडो पर लटके
ऊधे गुमसुम सभी
मगर पतझर की झाड़
झाड किनारे रख जाएगी
जाने क्या-क्या ·········

माटी नही रही है ऊसर
झरी कही से बूद
हुई है बीजवती यह
हरियल मन फिर रचनाएगी

जाने क्या-क्या कर जाएगी

□□